Birth Centenary of Legends

India is celebrating birth centenary of five iconic figures who shaped the golden era of Indian cinema, the Ministry of Information & Broadcasting is set to pay an enduring tribute to their rich legacy. This momentous occasion will be marked at the **first edition of the World Audio Video & Entertainment Summit (WAVES-2025)**, scheduled from **01st to 04th May 2025** in Mumbai — the heartland of India's entertainment industry.

The Summit, envisioned as a global confluence of creators, storytellers, policy makers, and innovators from the world of audio-visual and entertainment arts, opens on **01st May 2025** with a grand inaugural ceremony. As a centerpiece of the inaugural event, the Government of India releases **Commemorative Postage Stamp** honoring **five legendary figures of Indian cinema — Shri Guru Dutt, Shri Ritwik Ghatak, Shri Salil Chowdhury, Shri Raj Khosla, and Ms. P. Bhanumathi** — on the occasion of their birth centenaries.

This rare tribute underscores the nation's deep appreciation for these iconic personalities whose timeless contributions have left an indelible mark on Indian and global cinematic traditions.

1. Guru Dutt: A visionary artist and one of the most revered auteurs of Indian cinema. Guru Dutt's name is synonymous with poetic storytelling and visual brilliance. As an actor, director, producer, writer, and choreographer, he brought an unmatched sensitivity and introspection to Indian film narratives. Known for classics like *Pyaasa*, *Kaagaz Ke Phool*, and *Sahib Bibi Aur Ghulam*, his films explored themes of existential despair, unrequited love, and the complexities of human emotions. Dutt's mastery over lighting, innovative camera angles, and soulful music sequences turned his films into lyrical masterpieces. Though his life was tragically short, his cinematic legacy continues to inspire filmmakers.

2. Ritwik Ghatak: A pillar of Indian parallel cinema, Ritwik Ghatak was a Bengali filmmaker whose powerful narratives reshaped the language of Indian filmmaking. His deeply personal and socially conscious films—such as *Meghe Dhaka Tara*, *Subarnarekha*, and *Komal Gandhar*—delved into the trauma of the Partition, themes of displacement, cultural identity, and the resilience of the human spirit. Known for his stylized yet emotionally resonant storytelling, Ghatak was a master of fusing folklore and mythology with the harsh realities of modern life. Though his work received limited acclaim during his lifetime, today he is celebrated as a cinematic icon whose influence is felt not just in India but globally among serious filmmakers and scholars.

3. Salil Chowdhury: A multifaceted genius, Salil Chowdhury was one of India's most innovative music composers, lyricists, and poets. With an uncanny ability to blend Indian classical and folk traditions with Western orchestration, he created melodies that were deeply rooted in cultural ethos and emotions. His music transcended linguistic boundaries, with iconic compositions in Hindi, Bengali, Malayalam, and more. Films like *Madhumati*, *Do Bigha Zamin*, and *Anand* showcased his musical brilliance and commitment to socially relevant themes. A staunch believer in art as a vehicle for justice and change, *Salilda*—as he was fondly known—remains a towering figure in Indian film music, whose compositions continue to resonate with emotion, depth, and harmony.

4. Raj Khosla: A master storyteller and one of the foremost directors of Hindi cinema's golden age, Raj Khosla brought elegance, suspense, and musical magic to mainstream films. Renowned for his versatility, Khosla helmed a wide range of genres—from thrillers (*Woh Kaun Thi, Mera Saaya*) to romantic dramas (*Do Badan*, *Main Tulsi Tere Aangan Ki*) and action-packed narratives. He was known for crafting strong female characters and weaving music into the very fabric of his stories. His collaborations with celebrated actors and composers produced some of Bollywood's most memorable cinematic moments. Raj Khosla's work not only entertained millions but also elevated the narrative structure of commercial Hindi films.

5. P. Bhanumathi: A trailblazer in every sense, P. Bhanumathi was a multi-talented powerhouse whose contributions transformed South Indian cinema. An accomplished actress, singer, director, and writer, she broke barriers at a time when female voices were rarely heard behind the camera. Starring in numerous Telugu and Tamil films, Bhanumati brought strength, grace, and complexity to her roles. As one of India's first female film directors, she tackled bold social themes and established a commanding presence on and off screen. Her artistic courage and pioneering spirit continue to inspire generations of women in Indian cinema, making her a beacon of empowerment and excellence.

Department of Posts is proud to release Miniature Sheet to celebrate the birth centenary of these legends of Indian cinema.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Suresh Kumar
Text	:	Referenced from content provided by Proponent.

India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
Department of Posts

विवरणिका BROCHURE



विख्यात हस्तियों की जन्म शताब्दी
BIRTH CENTENARY OF LEGENDS

waves
WORLD AUDIO VISUAL & ENTERTAINMENT SUMMIT
Connecting Creators, Connecting Countries

विख्यात हस्तियों की जन्म शताब्दी

भारत देश, इस वर्ष उन पाँच प्रतिष्ठित हस्तियों की जन्म शताब्दी मना रहा है, जिन्होंने भारतीय सिनेमा के स्वर्णिम युग की नींव रखी। इस महत्वपूर्ण अवसर पर 'सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय' इन महान हस्तियों की समृद्ध विरासत का उत्सव मनाने की तैयारी कर रहा है। यह गौरवपूर्ण उत्सव भारत के मनोरंजन उद्योग के केंद्र– मुंबई में **01 से 04 मई 2025** तक आयोजित होने वाले **'विश्व ऑडियो वीडियो एवं मनोरंजन कला शिखर सम्मेलन'** (WAVES-2025) के पहले संस्करण के एक हिस्से के रूप में मनाया जा रहा है।

इस शिखर सम्मेलन का शुभारंभ **01 मई 2025** को एक भव्य उद्घाटन समारोह के साथ किया जाएगा। इस सम्मेलन की परिकल्पना ऑडियो–विजुअल और मनोरंजन कला की दुनिया के तमाम रचनाकारों, कहानीकारों, नीति निर्माताओं और नवप्रवर्तकों के एक वैश्विक संगम के रूप में की गई है। इस शिखर सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के दौरान भारत सरकार द्वारा **भारतीय सिनेमा की पाँच महान हस्तियों – श्री गुरुदत्त, श्री ऋत्विक घटक, श्री सलिल चौधरी, श्री राज खोसला और सुश्री पी. भानुमति** की जन्म शताब्दी के अवसर पर उन्हें सम्मानित करते हुए **स्मारक डाक टिकट जारी की जा रही है।**

यह अद्भुत आयोजन, भारतीय और वैश्विक सिनेमाई जगत में अपने कालातीत योगदान के माध्यम से अमिट छाप छोड़ने वाली इन प्रतिष्ठित हस्तियों के प्रति राष्ट्र की गहन श्रद्धा का प्रतीक है।

1. गुरु दत्तः अपनी काव्यात्मक कहानी कला और दृश्यों के अद्भुत फिल्मांकन के लिए प्रसिद्ध गुरु दत्त एक दूरदर्शी कलाकार थे। वे भारतीय सिनेमा के सर्वश्रेष्ठ निर्देशकों में से एक थे। गुरु दत्त ने अभिनेता, निर्देशक, निर्माता, लेखक और कोरियोग्राफर के रूप में भारतीय फिल्म जगत में संवेदनशीलता और आत्मनिरीक्षण के युग की शुरुआत की। *प्यासा, 'कागज के फूल' तथा 'साहिब बीबी और गुलाम' जैसी क्लासिक फिल्मों के लिए जाने जाने वाले,* गुरु दत्त की फिल्में अस्तित्वगत निराशा, निस्वार्थ प्रेम और मानवीय संवेदनाओं के जटिल पहलुओं को उजागर करती हैं। कलापूर्ण लाइटिंग, कैमरे का अभिनव रीति से इस्तेमाल करने और आत्मा को झकझोर देने वाले संगीत के साथ–साथ दृश्यों के शानदार फिल्मांकन में गुरु दत्त साहब को महारत हासिल थी। उनकी इसी प्रतिभा ने उनकी फिल्मों को उत्कृष्ट काव्यात्मक कृतियों के रूप में तब्दील कर दिया। यद्यपि, उनका जीवन काल बहुत बड़ा नहीं था, तथापि उनकी सिनेमाई विरासत दुनिया भर के फिल्म निर्माताओं की तमाम पीढ़ियों को निरंतर प्रेरित करती आ रही है।

2. ऋत्विक घटकः भारतीय समानांतर सिनेमा के आधार स्तंभ, ऋत्विक घटक एक बंगाली फिल्म निर्माता थे। उनकी प्रभावपूर्ण और तात्कालिक राजनीतिक परिदृश्य से प्रेरित कहानियों ने भारतीय फिल्म निर्माण कला को नया स्वरूप प्रदान किया। व्यक्ति और सामाज की अंतर–आत्मा की गहन पड़ताल करने वाली उनकी फिल्में– जैसे *'मेघे ढका तारा', सुवर्णरेखा और कोमल गांधार*– विभाजन के आघात, विस्थापन संबंधी विषयों, सांस्कृतिक पहचान तथा मानव की संघर्ष करने की असीम क्षमता पर आधारित थीं। ऋत्विक घटक अपनी कलात्मक शैली और भावनात्मक रूप से झकझोर देने वाली कहानी कला के लिए जाने जाते हैं। उन्हें लोक–कथाओं और पौराणिक कथाओं को आधुनिक जीवन की कठोर वास्तविकताओं के साथ मिश्रित कर प्रस्तुत करने में महारत हासिल थी। यद्यपि, अपने जीवनकाल के दौरान उन्हें अपने काम को लेकर उतनी प्रशंसा नहीं मिल पाई। तथापि, आज उन्हें एक ऐसे सिनेमाई दिग्गज के रूप में ख्याति प्राप्त है जो न केवल भारत बल्कि विश्व भर के गंभीर फिल्म निर्माताओं और विद्वानों को प्रभावित करता हैं।

3. सलिल चौधरीः बहुमुखी प्रतिभा के धनी सलिल चौधरी भारत के सबसे नवोन्मेषी संगीतकार, गीतकार और कवियों में से एक थे। सलिल के पास भारतीय शास्त्रीय और लोक संगीत तथा पश्चिमी धुनों को मिश्रित करने की विलक्षण क्षमता थी। अपनी इस प्रतिभा से उन्होंने ऐसी धुनें तैयार की जिनकी जड़ें सांस्कृतिक लोकाचार में गहराई से निहित थीं। उनका संगीत भाषाई सीमाओं से परे था। उन्होंने हिंदी, बंगाली, मलयालम तथा अन्य भाषाओं में कालजयी गीत दिए। मधुमती, *दो बीघा जमीन और आनंद जैसी फिल्मो* ने संगीत के क्षेत्र में उनकी विलक्षण प्रतिभा और सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषयों के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को उजागर किया। कला को न्याय और परिवर्तन का माध्यम मानने वाले *'सलिल दा'*, भारतीय फिल्म संगीत में आज भी अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। संवेदना, गांभीर्य और समरसता से सराबोर उनकी रचनाएँ सदैव हमारे दिलों में गूँजती रहेंगी।

4. राज खोसलाः राज खोसला हिंदी सिनेमा के स्वर्णिम युग के श्रेष्ठतम कहानीकारों और अग्रणी निर्देशकों में शामिल थे। मुख्यधारा की भारतीय फिल्मों को लालित्य, कौतूहल और 'मंत्रमुग्ध कर देने वाले संगीत' से समृद्ध करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के लिए सुविख्यात, खोसला ने थ्रिलर (*वो कौन थी, मेरा साया*) से लेकर रोमांटिक ड्रामा (*दो बदन, मैं तुलसी तेरे आंगन की*) और एक्शन से भरपूर फिल्मों का निर्माण किया। उन्हें सशक्त महिला पात्रों को गढ़ने और गीत–संगीत को फिल्म कहानियों के ताने–बाने का हिस्सा बना देने के लिए जाना जाता है। मशहूर अभिनेताओं और संगीतकारों के साथ उनकी जुगलबंदी ने बॉलीवुड की कुछ सबसे यादगार सिनेमाई रचनाएँ दी हैं। राज खोसला के काम ने न केवल लाखों लोगों का मनोरंजन किया, बल्कि व्यावसायिक हिंदी फिल्मों के निर्माण को भी ऊंचा मुकाम दिलाया।

5. पी. भानुमतीः बहुमुखी प्रतिभा की धनी पी. भानुमती ने सिनेमा जगत में हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई। उनके योगदान ने दक्षिण भारतीय सिनेमा को बदलकर रख दिया। वे एक निपुण अभिनेत्री, गायिका, निर्देशक और लेखिका थीं। उन्होंने अपने समय की तमाम वर्जनाओं को तोड़ा। वे एक ऐसे कालखंड में कैमरे के पीछे महिलाओं की आवाज बनीं जब शायद ही कोई महिला इस क्षेत्र में कदम रखती थी। भानुमती ने कई तेलुगु और तमिल फिल्मों में अभिनय किया। उन्होंने अपनी सभी भूमिकाएँ पूरी शक्ति, उदात्तता और गहराई से निभाईं। भारत की पहली महिला फिल्म निर्देशकों में से एक के रूप में, उन्होंने साहसिक सामाजिक फिल्मों का निर्माण किया और स्क्रीन पर तथा उसके बाहर भी अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई। पी. भानुमती ने कला के क्षेत्र में जिस साहस और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया है, वह भारतीय सिनेमा में पदार्पण करने वाली महिलाओं को पीढ़ियों तक प्रेरित करता रहेगा और सुश्री भानुमती सशक्तिकरण तथा उत्कृष्टता की एक देदीप्यमान मशाल बनकर चिरकाल तक प्रकाशित रहेंगी।

डाक विभाग भारतीय सिनेमा के इन दिग्गजों की जन्म शताब्दी के अवसर पर मिनियचर शीट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है।

आभार:

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे: श्री सुरेश कुमार

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसे 500p
मुद्रित मिनियचर शीट Miniature Sheets Printed	: :	211200 211200
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00